DEPARTMENT OF HINDI

COURSE CURRICULUM & MARKING SCHEME

UG I, II, III, IV Semester
HINDI
(Based on Choice Based Credit System)
&
B.A./B.Sc./B.Com. Part – III
HINDI LANGUAGE

B.A. Part – III
HINDI LITERATURE

SESSION : 2023-24

ESTD : 1958

GOVT. V.Y.T. PG AUTONOMOUS COLLEGE, DURG, 491001 (C.G.)

(Former Name – Govt. Arts & Science College, Durg)

NAAC Accredited Grade A+, College with CPE - Phase III (UGC), STAR COLLEGE (DBT)

Phone : 0788-2212030

Website - www.govtsciencecollegedurg.ac.in, Email – autonomousdurg2013@gmail.com

शासकीय विश्वनाथ यादव तामस्कर स्नातकोत्तर (स्वशासी) महाविद्यालय, दुर्ग

हिन्दी विभाग

पाठ्यक्रम

सत्र 2023-2024

च्वाइस बेस्ड क्रेडिट सिस्टम के अंतर्गत (CBCS) पाठ्यक्रम

(हिंदी)

प्रथम सेमेस्टर

द्वितीय सेमेस्टर

तृतीय सेमेस्टर

चतुर्थ सेमेस्टर

त्रिवर्षीय पाठ्यक्रम के अंतर्गत

बी. ए. भाग-तीन हिन्दी साहित्य

बी. ए. / बी.एससी./ बी.कॉम. भाग-तीन हिंदी भाषा

GOVT. V.Y.T. PG COLLEGE, DURG
DEPARTMENT OF HINDI
STRUCTURE OF UG PROGRAMME (HINDI)

Sem.	Core Course (DSE)	Elective (DSE)	Generic Elective (GE)	Ability Enhancement Course (AEC)	Skill Enhancement Course (SEC)	Internship / Project	Value Added Course (VAC)	Total Credit
I	हिन्दी साहित्य का इतिहास 04	-	हिन्दी साहित्य का इतिहास 04	भाषा व्यवहार एवं सृजनात्मक साहित्य 02	कार्यालयीन भाषा अनुप्रयोग 02	व्यक्तित्व विकास 02		22
II	मध्य कालीन हिन्दी कविता 04	-	मध्य कालीन हिन्दी कविता 04	अंग्रेज़ी भाषा 02	विज्ञापन और समाचार लेखन 02	योग विज्ञान 02		22
III	आधुनिक हिन्दी कविता भारतेंदु से छायावाद 04	लोक साहित्य अथवा आधुनिक हिन्दी कविता भारतेंदु से छायावाद (GEC) 04		रचना कौशल 02	कार्यालयीन भाषा अनुप्रयोग 02	व्यक्तित्व विकास 02		22
IV	आधुनिक हिन्दी कविता प्रगतिवाद से बीसवीं शताब्दी के अंत तक 04	छत्तीसगढ़ी लोक साहित्य अथवा आधुनिक हिंदी कविता : प्रगतिवाद से बीसवीं शताब्दी के अंत तक (GEC) 04		अंग्रेज़ी भाषा 02	विज्ञापन और समाचार लेखन 02	योग विज्ञान 02		22
V	कथा साहित्य कहानी और उपन्यास 04	भारतीय साहित्य 04	कथा साहित्य कहानी और उपन्यास 04	-	कार्यालयीन भाषा अनुप्रयोग 02			22
VI	कथेतर गद्य साहित्य 04	लोक नाट्य परंपरा और हिन्दी 04	कथेतर गद्य साहित्य 04	-	विज्ञापन और समाचार लेखन 02			22

सत्र 2023-24
बी. ए. प्रथम सेमेस्टर
मूल पाठ्यक्रम (कोर कोर्स) हिंदी
हिन्दी साहित्य का इतिहास
पाठ्यक्रम कोड: BHN-CCH 101

क्रेडिट: 04

पूर्णांक : 80

पाठ्यक्रम का उद्देश्य –

1. हिन्दी साहित्य के ऐतिहासिक विकासक्रम से अवगत कराना।
2. हिन्दी साहित्य के प्रारम्भिक और विकासात्मक स्वरुप से परिचय कराना।
3. हिन्दी समाज के सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक विकास के समानान्तर हिन्दी साहित्य के विकासक्रम की समझ विकसित करना।
4. हिन्दी साहित्य के साहित्यकारों और उनकी रचनाओं से अवगत कराना।

पाठ्यक्रम विवरण –

इकाई 1. काल विभाजन एवं नामकरण, आदिकालीन काव्य धाराएँ, सिद्ध, नाथ एवं जैन साहित्य प्रमुख रासो काव्य, आदिकालीन हिन्दी साहित्य की सामान्य विशेषताएँ

इकाई 2 : भक्ति आन्दोलन सांस्कृतिक पृष्ठभूमि प्रमुख निर्गुण कवि प्रमुख सगुण कवि, भक्तिकाल की सामान्य विशेषताएँ

इकाई 3 : रीतिकाल की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि रीतिबद्ध रीतिसिद्ध, तथा रीतिमुक्त काव्यधारा की प्रवृत्तियाँ तथा प्रमुख कवि

इकाई 4 : सन 1857 का स्वतन्त्रता संघर्ष और हिन्दी नवजागरण, भारतेंदु युगीन साहित्य की विशेषताएँ, महावीर प्रसाद द्विवेदी उनका युग प्रमुख साहित्यकार मैथिलीशरण गुप्त और राष्ट्रीय काव्यधारा।

पाठ्यक्रम अधिगम परिणाम –

इस पाठ्यक्रम के पूर्ण करने के पश्चात विद्यार्थी–

1. हिन्दी साहित्य के ऐतिहासिक विकासक्रम से अवगत हो सकेंगे।
2. हिन्दी साहित्य के विकासात्मक स्वरूप से परिचित हो सकेंगे
3. हिन्दी समाज के सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक विकास के समानांतर हिन्दी साहित्य के विकासक्रम की समझ प्राप्त कर सकेंगे।
4. हिन्दी साहित्य के साहित्यकारों एवं उनकी रचनाओं से अवगत हो सकेंगे।

अंक विभाजन –

प्रत्येक प्रश्नपत्र में तीन खण्ड (क. ख. तथा ग) होंगे। विद्यार्थियों से पाठ्यक्रम में निर्दिष्ट विषय–सामग्री का अध्ययन अपेक्षित है। प्रत्येक प्रश्न पत्र 80 अंकों का होगा। आंतरिक मूल्यांकन में 20 अंक होंगे।

क्र.	प्रश्न का प्रकार		अंक
खंड क	अति लघुत्तरी प्रश्न / वस्तुनिष्ठ प्रश्न (बहुविकल्पी प्रश्न नहीं होंगे)		2X10=20
खंड ख	लघुत्तरी प्रश्न (प्रत्येक 150 शब्द अधिकतम)		5X4=20
खंड ग	दीर्घ उत्तरी प्रश्न (350 शब्द अधिकतम) तथा व्याख्यात्मक प्रश्न	दीर्घ उत्तरी प्रश्न	8X5 =40
सेमेस्टर परीक्षा		कुल अंक	80
आंतरिक मूल्यांकन		जाँच परीक्षा	10
		सत्रीय कार्य	10
		कुल अंक	20
पाठ्यक्रम में कुल अंक			100

हस्ताक्षर अध्ययन मंडल

सत्र 2023-24
बी. ए. प्रथम सेमेस्टर
जेनेरिक पाठ्यक्रम (Generic Elective Course) हिंदी
हिन्दी साहित्य का इतिहास
पाठ्यक्रम कोड: BHN-GEC 102

क्रेडिट: 04

पूर्णांक : 80

पाठ्यक्रम का उद्देश्य –

1. हिन्दी साहित्य के ऐतिहासिक विकासक्रम से अवगत कराना।
2. हिन्दी साहित्य के प्रारम्भिक और विकासात्मक स्वरुप से परिचय कराना।
3. हिन्दी समाज के सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक विकास के समानान्तर हिन्दी साहित्य के विकासक्रम की समझ विकसित करना।
4. हिन्दी साहित्य के साहित्यकारों और उनकी रचनाओं से अवगत कराना।

पाठ्यक्रम विवरण –

इकाई 1. काल विभाजन एवं नामकरण, आदिकालीन काव्य धाराएँ, सिद्ध, नाथ एवं जैन साहित्य प्रमुख रासो काव्य, आदिकालीन हिन्दी साहित्य की सामान्य विशेषताएँ

इकाई 2 : भक्ति आन्दोलन सांस्कृतिक पृष्ठभूमि, प्रमुख निर्गुण कवि, प्रमुख सगुण कवि, भक्तिकाल की सामान्य विशेषताएँ

इकाई 3 : रीतिकाल की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, रीतिबद्ध, रीतिसिद्ध तथा रीतिमुक्त काव्यधारा की प्रवृत्तियाँ तथा प्रमुख कवि

इकाई 4 : सन 1857 का स्वतन्त्रता संघर्ष और हिन्दी नवजागरण, भारतेंदु युगीन साहित्य की विशेषताएँ, महावीर प्रसाद द्विवेदी उनका युग प्रमुख साहित्यकार मैथिलीशरण गुप्त और राष्ट्रीय काव्यधारा।

पाठ्यक्रम अधिगम परिणाम –

इस पाठ्यक्रम के पूर्ण करने के पश्चात विद्यार्थी–

1. हिन्दी साहित्य के ऐतिहासिक विकासक्रम से अवगत हो सकेंगे।
2. हिन्दी साहित्य के विकासात्मक स्वरूप से परिचित हो सकेंगे
3. हिन्दी समाज के सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक विकास के समानांतर हिन्दी साहित्य के विकासक्रम की समझ प्राप्त कर सकेंगे।
4. हिन्दी साहित्य के साहित्यकारों एवं उनकी रचनाओं से अवगत हो सकेंगे।

अंक विभाजन –

प्रत्येक प्रश्नपत्र में तीन खण्ड (क. ख. तथा ग) होंगे। विद्यार्थियों से पाठ्यक्रम में निर्दिष्ट विषय-सामग्री का अध्ययन अपेक्षित है। प्रत्येक प्रश्न पत्र 80 अंकों का होगा। आंतरिक मूल्यांकन में 20 अंक होंगे।

क्र.	प्रश्न का प्रकार		अंक
खंड क	अति लघुत्तरी प्रश्न / वस्तुनिष्ठ प्रश्न (बहुविकल्पी प्रश्न नहीं होंगे)		2X10=20
खंड ख	लघुत्तरी प्रश्न (प्रत्येक 150 शब्द अधिकतम)		5X4=20
खंड ग	दीर्घ उत्तरी प्रश्न (350 शब्द अधिकतम) तथा व्याख्यात्मक प्रश्न	दीर्घ उत्तरी प्रश्न	8X5 =40
सेमेस्टर परीक्षा		कुल अंक	80
आंतरिक मूल्यांकन		जाँच परीक्षा	10
		सत्रीय कार्य	10
		कुल अंक	20
पाठ्यक्रम में कुल अंक			100

हस्ताक्षर अध्ययन मंडल

सत्र 2023-24

बी.ए./बी.एससी./बी.कॉम प्रथम सेमेस्टर

क्षमता संवर्धन पाठ्यक्रम (एबिलिटी एन्हांसमेंट कोर्स) हिंदी

भाषा व्यवहार और सृजनात्मक साहित्य

पाठ्यक्रम कोड: AECH - 103

क्रेडिट: 02

पूर्णांक : 40

पाठ्यक्रम का उद्देश्य -

1. विद्यार्थियों में भाषा के व्यावहारिक पहलुओं की सामान्य समझ विकसित करना।
2. अर्जित भाषा ज्ञान को अपने निजी भाषा व्यवहार में समुचित रूप से लागू करने की क्षमता विकसित करना।
3. हिन्दी की कुछ उत्कृष्ट रचनाओं से परिचय कराना।
4. साहित्यिक रचनाओं की अंतर्वस्तु के विश्लेषण की पद्धति से परिचय कराना।
5. विद्यार्थियों में रचना के मूल्यांकन की समझ उत्पन्न करना।
6. साहित्यिक पाठ के सूक्ष्म अध्ययन के द्वारा विद्यार्थियों की सृजनात्मक एवं विश्लेषणात्मक क्षमता का विकास करना।

पाठ्यक्रम विवरण -

इकाई 1 :

(क) शब्द - विचार : (1) शब्दों का वर्गीकरण - 1. अर्थ के आधार पर , 2 परिवर्तन के आधार पर 3. व्युत्पत्ति के आधार पर 4. उत्पत्ति के आधार पर (2) शब्द रचना उपसर्ग, प्रत्यय, संधि और समास

(ख) स्नेह निर्झर वह गया- पं सूर्यकांत त्रिपाठी निराला

इकाई 2 :

(क) शब्दों का व्यावहारिक ज्ञान - उनार्थक, पर्यायवाची अनेकार्थी, समानार्थी, समश्रुति मूलक, विपरार्थी शब्द, अनेक शब्दों के लिए एक शब्द

(ख) अभी तक बारिश नहीं हुई : विनोद कुमार शुक्ल

इकाई 3 :

(क) विकारी शब्द संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण क्रिया, वाच्य

(ख) सवा सेर गेहूँ - प्रेमचंद

इकाई 4:

(क) अशुद्धियाँ एवं अशुद्धि शोधन – स्वर संबंधी, व्यंजन संबंधी संज्ञा संबंधी, सर्वनाम संबंधी, विशेषण संबंधी, क्रिया संबंधी, वाच्य संबंधी

(ख) दो नाक वाले लोग – हरिशंकर परसाई

पाठ्यक्रम अधिगम परिणाम –

इस पाठ्यक्रम के पूर्ण करने के पश्चात् विद्यार्थी –

1. विद्यार्थियों में भाषा के व्यावहारिक पहलुओं की सामान्य समझ विकसित हो सकेगी।
2. विद्यार्थी अपने अर्जित भाषा ज्ञान को निजी भाषा व्यवहार में समुचित रूप से लागू करने की क्षमता विकसितकर सकेंगे।
3. हिन्दी की कुछ उत्कृष्ट रचनाओं से परिचय कर सकेंगे।
4. साहित्यिक रचनाओं की अंतर्वस्तु के विश्लेषण की पद्धति से परिचित हो सकेंगे। 5. विद्यार्थियों में रचना के मूल्यांकन की समझ उत्पन्न होगी।
6. साहित्यिक पाठ के सूक्ष्म अध्ययन के द्वारा विद्यार्थियों की सृजनात्मक एवं विश्लेषणात्मक क्षमता का विकास होंगे।

अंक विभाजन –

प्रत्येक प्रश्नपत्र में तीन खण्ड (क. ख. तथा ग) होंगे। विद्यार्थियों से पाठ्यक्रम में निर्दिष्ट विषय सामग्री का अध्ययन अपेक्षित है।

क्र.	प्रश्न का प्रकार	अंक
खंड क	अति लघुत्तरी /वस्तुनिष्ठ प्रश्न (बहुविकल्पी प्रश्न नहीं होंगे)	1 X10=10
खंड ख	लघुत्तरी प्रश्न (प्रत्येक 150 शब्द अधिकतम)	2 X5 =10
खंड ग	दीर्घ उत्तरी प्रश्न (प्रत्येक 350 शब्द अधिकतम)	4 X5 =20
आंतरिक मूल्यांकन (सेमेस्टर परीक्षा के पैटर्न के अनुसार)		10
कुल अंक		50

संदर्भ ग्रन्थ सूची –

1. हिन्दी भाषा और व्यवहार – डॉ. गंगाचरण त्रिपाठी।
2. हिन्दी व्याकरण माला – डॉ. के. आर. महिया, डॉ. विमलेश शर्मा
3. आधुनिक हिन्दी व्याकरण और रचना – डॉ. वासुदेव नंदन
4. प्रतिनिधि कविताएं – विनोद कुमार शुक्ल
5. कथाकार विनोद कुमार शुक्ल : डॉ. आस्था तिवारी
6. खिडकी के पार – डॉ. योगेश तिवारी
7. प्रेमचंद जीवन कला और कृतित्व – हंसराज रहबर
8. कहानीकार प्रेमचंद, रचना दृष्टि और रचना शिल्प – शिवकुमार मिश्र
9. कवि निराला – नंददुलारे वाजपेयी
10. हरिशंकर का व्यंग्य साहित्य – कपिल कुमार सिंह राघव
11. कथाशिखर – हरिशंकर परसाई सं. विजय गुप्त
12. राहुल सांकृत्यायन घुम्मकड़शास्त्र और यात्रावृत्त– डॉ जानकी पाण्डेय
13. राहुल सांकृत्यायन की इतिहास दृष्टि – डॉ चंद्रभानु

• हस्ताक्षर अध्ययन मण्डल :–

सत्र 2023- 24

बी.ए./बी.एससी./बी.कॉम प्रथम सेमेस्टर

कौशल संवर्धन पाठ्यक्रम (स्किल एन्हांसमेंट कोर्स) हिंदी

कार्यालयीन भाषा-अनुप्रयोग

पाठ्यक्रम कोड: SECH- 104

क्रेडिट: 02

कुल अंक : 50

पाठ्यक्रम का उद्देश्य -

इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य है, विद्यार्थियों को

1. कार्यालयीन भाषा के रूप में हिंदी के प्रकार्यात्मक पक्ष की सम्यक जानकारी 2. हिंदी में कार्यालयीन कामकाज की पध्दति और प्रक्रिया से अवगत कराना।
3. हिंदी में पत्राचार और टिप्पण के व्यावहारिक पक्षों की जानकारी देना ज्ञान कराना।
4. बैंकिंग कार्यालयीन दूरसंचार व्यवसाय और कानून की शब्दावली से परिचय कराना।

पाठ्यक्रम विवरण -

इकाई -1

कार्यालयीन भाषा प्रारूपण (पत्राचार, कार्यालय ज्ञापन, कार्यालय आदेश, परिपत्र, अधिसूचना, अर्धशासकीय पत्र, आवेदन पत्र, प्रतिवेदन, अनुस्मारक, पृष्ठांकन, शासकीय संकल्प)।

इकाई-2

टिप्पण -प्रक्रिया एवं स्वरूप, व्यवहारिक अनुप्रयोग।

संक्षेपण प्रक्रिया एवं स्वरूप -कार्यालयीन अनुप्रयोग। पारिभाषिक शब्दावली - स्वरूप, प्रक्रिया एवं महत्व।

इकाई- 3

अनुवाद का स्वरूप -प्रक्रिया, प्रविधि एवं महत्व। कार्यालयीन हिंदी और अनुवाद।

इकाई- 04

अनुवाद का प्रकार्यात्मक महत्व जनसंचार विज्ञान, तकनीकी, बैंकिंग, वाणिज्य, विधि आदि क्षेत्रों में अनुवाद की भूमिका।

प्रायोगिक ज्ञान/प्रोजेक्ट :

विद्यार्थियों को पाठ्यक्रम के आधार पर प्रारूपण, टिप्पण एवं अनुवाद से संबंधित प्रोजेक्ट कार्य कर प्रतिवेदन प्रस्तुत करना होगा।

1. कार्यालयीन पत्राचार, टिप्पण एवं अनुवाद।
2. अनुवाद दक्षता का व्यावहारिक परीक्षण ।

पाठ्यक्रम का अधिगम परिणाम :

इस पाठ्यक्रम का अध्ययन करने के उपरांत विद्यार्थियों को-

1. राजभाषा के रूप में हिंदी के प्रकार्यात्मक पक्ष की सम्यक जानकारी प्राप्त होगी।

2. हिंदी में कार्यालयीन कामकाज की पद्धति और प्रक्रिया का समुचित ज्ञान होगा।

3. हिंदी में पत्राचार और टिप्पण के व्यावहारिक पक्षों की जानकारी प्राप्त होगी। 4. बैंकिंग कार्यालयीन दूरसंचार व्यवसाय और कानून की शब्दावली का ज्ञान होगा। 5. कार्यालयीन कामकाज में अनुवाद के प्रयोग का सामान्य ज्ञान हो सकेगा।

अंक विभाजन -

प्रश्नपत्र में कुल 50 अंक होंगे। अंकों का वितरण निम्नानुसार होगा -

सेमेस्टर लिखित परीक्षा	प्रश्नों की सँख्या	अंक
	इकाई -1 एवं इकाई-3 से 03 प्रश्न शेष इकाइयों में से प्रत्येक से 02 प्रश्न (इनमें से कुल 05 प्रश्न हल करना होगा)	4 X 5 = 20
आंतरिक मूल्यांकन	कुल 05 प्रश्न हल करना होगा।	1 x 5=05
प्रोजेक्ट कार्य : 25	प्रारूपण, टिप्पण एवं अनुवाद	25
कुल अंक		50

सन्दर्भ पुस्तकें :

1. कार्यालयीन हिंदी की प्रकृति (चंद्रपाल शर्मा)

2. सरकारी कार्यालयों में हिंदी का प्रयोग (गोपीनाथ श्रीवास्तव)

3. आधुनिक हिंदी व्याकरण और रचना (डॉ. वासुदेवनंदन प्रसाद)

4. प्रयोजनमूलक हिंदी (विनोद गोदरे)

5. प्रयोजनमूलक हिंदी (माधव सोनटक्के)

6.प्रयोजनमूलक हिंदी (डॉ. संजीव जैन)

हस्ताक्षर अध्ययन मंडल

सत्र 2023-24

बी. ए. द्वितीय सेमेस्टर

मूल पाठ्यक्रम (कोर कोर्स) हिंदी

मध्यकालीन हिन्दी कविता

पाठ्यक्रम कोड: BHN-CCH 201

केडिट : 04

पूर्णांक : 80

पाठ्यक्रम का उद्देश्य –

इसका उद्देश्य है विद्यार्थियों को–

1. मध्यकालीन हिन्दी कविता का प्रारम्भिक ज्ञान प्रदान करना।
2. मध्यकालीन हिन्दी कविता की मूल संवेदना तथा उसके भाषिक स्वरुप से अवगत कराना।
3. भारतीय संस्कृति विशेषत: भक्तियुगीन संस्कृति से समन्वयात्मक स्वभाव के प्रति रुझान उत्पन्न करना।
4. मध्यकालीन लोक – जागरण की महान परम्परा से अवगत कराना।

पाठ्यक्रम विवरण–

इकाई 1 : कबीरदास :

15 साखियाँ (सतगुरु की महिमा अनंत, राम नाम के पटंतरै, सतगुरु मिल्या त का भया, कबीर सुमिरन सार है, मेरा मन सुमिरै राम कूँ, अंबर कुंजाँ कुरलियाँ, मूवाँ पीछे जिनि मिलै, जिहि सरि मारी कालि्ह, अगिन जु लागी नीर में, समंदर लागी, आगी, हदे छाड़ि बेहदि गया, घट मांहै, औघट लह्या, कबीर भाठी कलाल की, जिहि सर घड़ा न डूबता, सुरति ढीकुली लेज ल्यौ)

इकाई 2 : सूरदास :

भ्रमरगीत सार : 15 पद (पहिले करि परनाम नन्द सों, कहियों नंद कठोर भए, जदुपति लख्यो तेहि, मुसकात, मन क्रम बच मैं तुम्हें पठावत, पथिक संदेसों कहियो जाय, नीके रहियो जसुमति मैया, सुनियो एक संदेसों ऊधो गोकुल को जात, कोऊ आवत है तन स्याम, है कोई वैसई अनुहारि, देखो नन्द द्वार रथ, ठाढो, कहाँ–कहाँ ते आए हौं, ऊधो को उपदेश सुनी किन कान दै, तू अलि !कासों कहत बनाय ?, हम तो नन्द घोष की बासी , गोकुल सबैं गोपाल उपासी)

इकाई 3 : तुलसीदास :

रामचरितमानस : सुन्दरकाण्ड (प्रारंभिक 10 दोहे–चौपाई)

इकाई 4 : घनानंद :

10 छंद : (जासों प्रीति ताहि निठुराई सौं निपट नेह, पूरन प्रेम को मंत्र महा पन, आनाकानी आरसी निहारिबो करोगे कौ लौं, हीन भएँ जल मीन अधीन, लाजनि लपेटि चितवनि भेद-भाय-भरी, रावरे रूप की रीति अनूप, पहिले घन आनंद सींचि सुजान, भए अति निठुर, मिटाय पहिचानि डारी, कारी कूर कोकिला कहाँ को बैर काढ़ति री, खोयदई बुधि सोय गई सुधि)।

पाठ्यक्रम अधिगम परिणाम

इस पाठ्यक्रम के पूर्ण करने के पश्चात् विद्यार्थी

1. भक्ति साहित्य के स्वरूप तथा उसकी संवेदना से परिचय होगा।
2. भक्तिकाल के प्रमुख कवियों की काव्य संवेदना और उनकी सर्जनात्मकता से परिचय होगा।
3. रीति साहित्य स्वरुप तथा उसकी संवेदना से परिचय होगा।
4. मध्यकालीन साहित्य की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि की जानकारी हो सकेगी ।

अंक विभाजन -

प्रत्येक प्रश्नपत्र में तीन खण्ड (क. ख. तथा ग) होंगे। विद्यार्थियों से पाठ्यक्रम में निर्दिष्ट विषय-सामग्री का अध्ययन अपेक्षित है ।

प्रत्येक प्रश्न पत्र 80 अंकों का होगा। आंतरिक मूल्यांकन में 20 अंक होंगे।

<table>
<tr><td>क्र.</td><td colspan="2">प्रश्न का प्रकार</td><td>अंक</td></tr>
<tr><td>खंड क</td><td colspan="2">अति लघुत्तरी प्रश्न / वस्तुनिष्ठ प्रश्न (बहुविकल्पी प्रश्न नहीं होंगे)</td><td>2X10=20</td></tr>
<tr><td>खंड ख</td><td colspan="2">लघुत्तरी प्रश्न (प्रत्येक 150 शब्द अधिकतम)</td><td>5X4=20</td></tr>
<tr><td rowspan="2">खंड ग</td><td rowspan="2">दीर्घ उत्तरी प्रश्न (350 शब्द अधिकतम) तथा व्याख्यात्मक प्रश्न</td><td>दीर्घ उत्तरी प्रश्न</td><td>8X2=16</td></tr>
<tr><td>व्याख्या</td><td>8X3=24</td></tr>
<tr><td colspan="2">सेमेस्टर परीक्षा</td><td>कुल अंक</td><td>80</td></tr>
<tr><td colspan="2" rowspan="3">आंतरिक मूल्यांकन</td><td>जाँच परीक्षा</td><td>10</td></tr>
<tr><td>सत्रीय कार्य</td><td>10</td></tr>
<tr><td>कुल अंक</td><td>20</td></tr>
<tr><td colspan="3">पाठ्यक्रम में कुल अंक</td><td>100</td></tr>
</table>

संदर्भ ग्रंथ सूची–

1. कबीर की विचारधारा : डॉ. गोविन्द त्रिगुणायत
2. कबीर साहित्य की परख : परशुराम चतुर्वेदी
3. प्रमुख प्राचीन कवि : डॉ द्वारिका प्रसाद सक्सेना
4. सूरदास के काव्य का मूल्यांकन : डॉ. रामरतन भटनागर
5. सूरदास : डॉ. हरवंश लाल शर्मा
6. तुलसीदास और उनका युग संदर्भ : डॉ. भगीरथ मिश्र
7. तुलसीदास : प्रो. सतीश कुमार
8. बिहारी : डॉ. विश्वनाथ प्रसाद मिश्र
9. रीतिकाव्य की भूमिका : नगेन्द्र
10. घनानंद काव्य और आलोचना : डॉ. किशोरीलाल

हस्ताक्षर अध्ययन मंडल

सत्र 2023-24

बी. ए. द्वितीय सेमेस्टर

जेनेरिक पाठ्यक्रम (Generic Elective Course) हिंदी

मध्यकालीन हिन्दी कविता

पाठ्यक्रम कोड: BHN-GEC 202

केडिट : 04

पूर्णांक : 80

पाठ्यक्रम का उद्देश्य –

इसका उद्देश्य है विद्यार्थियों को–

1. मध्यकालीन हिन्दी कविता का प्रारम्भिक ज्ञान प्रदान करना।
2. मध्यकालीन हिन्दी कविता की मूल संवेदना तथा उसके भाषिक स्वरुप से अवगत कराना।
3. भारतीय संस्कृति विशेषतः भक्तियुगीन संस्कृति से समन्वयात्मक स्वभाव के प्रति रुझान उत्पन्न करना।
4. मध्यकालीन लोक – जागरण की महान परम्परा से अवगत कराना।

पाठ्यक्रम विवरण–

इकाई 1 : कबीरदास :

15 साखियाँ (सतगुरु की महिमा अनंत, राम नाम के पटंतरै, सतगुरु मिल्या त का भया, कबीर सुमिरन सार है, मेरा मन सुमिरै राम कूँ, अंबर कुंजाँ कुरलियाँ, मूवाँ पीछे जिनि मिलै, जिहि सरि मारी कालि्ह, अगिन जु लागी नीर में, समंदर लागी, आगी, हदे छाड़ि बेहदि गया, घट मांहै, औघट लह्या, कबीर भाठी कलाल की, जिहि सर घड़ा न डूबता, सुरति ढीकुली लेज ल्यौ)

इकाई 2 : सूरदास :

भ्रमरगीत सार : 15 पद (पहिले करि परनाम नन्द सों, कहियों नंद कठोर भए, जदुपति लख्यो तेहि, मुसकात, मन क्रम बच मैं तुम्हें पठावत, पथिक संदेसों कहियो जाय, नीके रहियो जसुमति मैया, सुनियो एक संदेसों ऊधो गोकुल को जात, कोऊ आवत है तन स्याम, है कोई वैसई अनुहारि, देखो नन्द द्वार रथ, ठाढो, कहाँ-कहाँ ते आए हौं, ऊधो को उपदेश सुनी किन कान दै, तू अलि !कासों कहत बनाय ?, हम तो नन्दघोष की बासी , गोकुल सबैं गोपाल उपासी)

इकाई 3 : तुलसीदास :

रामचरितमानस : सुन्दरकाण्ड (प्रारंभिक 10 दोहे-चौपाई)

इकाई 4 : घनानंद :

10 छंद : (जासों प्रीति ताहि निठुराई सौं निपट नेह, पूरन प्रेम को मंत्र महा पन, आनाकानी आरसी निहारिबो करोगे कौ लौं, हीन भएँ जल मीन अधीन, लाजनि लपेटि चितवनि भेद-भाय-भरी, रावरे रूप

की रीति अनूप, पहिले घन आनंद सींचि सुजान, भए अति निठुर, मिटाय पहिचानि डारी, कारी कूर कोकिला कहाँ को बैर काढ़ति री, खोयदई बुधि सोय गई सुधि)।

पाठ्यक्रम अधिगम परिणाम

इस पाठ्यक्रम के पूर्ण करने के पश्चात् विद्यार्थी

1. भक्ति साहित्य के स्वरूप तथा उसकी संवेदना से परिचय होगा।
2. भक्तिकाल के प्रमुख कवियों की काव्य संवेदना और उनकी सर्जनात्मकता से परिचय होगा।
3. रीति साहित्य स्वरुप तथा उसकी संवेदना से परिचय होगा।
4. मध्यकालीन साहित्य की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि की जानकारी हो सकेगी ।

अंक विभाजन -

प्रत्येक प्रश्नपत्र में तीन खण्ड (क. ख. तथा ग) होंगे। विद्यार्थियों से पाठ्यक्रम में निर्दिष्ट विषय-सामग्री का अध्ययन अपेक्षित है ।

प्रत्येक प्रश्न पत्र 80 अंकों का होगा। आंतरिक मूल्यांकन में 20 अंक होंगे।

<table>
<tr><td>क्र.</td><td colspan="2">प्रश्न का प्रकार</td><td>अंक</td></tr>
<tr><td>खंड क</td><td colspan="2">अति लघुत्तरी प्रश्न / वस्तुनिष्ठ प्रश्न (बहुविकल्पी प्रश्न नहीं होंगे)</td><td>2X10=20</td></tr>
<tr><td>खंड ख</td><td colspan="2">लघुत्तरी प्रश्न (प्रत्येक 150 शब्द अधिकतम)</td><td>5X4=20</td></tr>
<tr><td rowspan="2">खंड ग</td><td rowspan="2">दीर्घ उत्तरी प्रश्न (350 शब्द अधिकतम) तथा व्याख्यात्मक प्रश्न</td><td>दीर्घ उत्तरी प्रश्न</td><td>8X2=16</td></tr>
<tr><td>व्याख्या</td><td>8X3=24</td></tr>
<tr><td colspan="2">सेमेस्टर परीक्षा</td><td>कुल अंक</td><td>80</td></tr>
<tr><td colspan="2" rowspan="3">आंतरिक मूल्यांकन</td><td>जाँच परीक्षा</td><td>10</td></tr>
<tr><td>सत्रीय कार्य</td><td>10</td></tr>
<tr><td>कुल अंक</td><td>20</td></tr>
<tr><td colspan="3">पाठ्यक्रम में कुल अंक</td><td>100</td></tr>
</table>

संदर्भ ग्रंथ सूची–

1. कबीर की विचारधारा : डॉ. गोविन्द त्रिगुणायत
2. कबीर साहित्य की परख : परशुराम चतुर्वेदी
3. प्रमुख प्राचीन कवि : डॉ द्वारिका प्रसाद सक्सेना
4. सूरदास के काव्य का मूल्यांकन : डॉ. रामरतन भटनागर
5. सूरदास : डॉ. हरवंश लाल शर्मा
6. तुलसीदास और उनका युग संदर्भ : डॉ. भगीरथ मिश्र
7. तुलसीदास : प्रो. सतीश कुमार
8. बिहारी : डॉ. विश्वनाथ प्रसाद मिश्र
9. रीतिकाव्य की भूमिका : नगेन्द्र
10. घनानंद काव्य और आलोचना : डॉ. किशोरीलाल

हस्ताक्षर अध्ययन मंडल

सत्र 2023-24

बी.ए./बी.एससी./बी.कॉम द्वितीय सेमेस्टर

कौशल संवर्धन पाठ्यक्रम (स्किल एन्हांसमेंट कोर्स) हिंदी

विज्ञापन और समाचार लेखन

पाठ्यक्रम कोड: SECH-203

पूर्णांक : 40

केडिट : 02

पाठ्यक्रम का उद्देश्य-

इस पाठ्यक्रम का -उदेश्य है विद्यार्थियों को-

1. विज्ञापन लेखन की कला से अवगत कराना।
2. मीडिया उद्योग के सम्बन्ध में जानकारी देना।
3. समाचार लेखन कला का ज्ञान कराना।
4. मीडिया के क्षेत्र में रोजगार की संभावनाओं से अवगत कराना।
5. साक्षात्कारकर्ता के रूप में विद्यार्थियों को तैयार करना।

पाठ्यक्रम विवरण-

इकाई-1 विज्ञापन की परिभाषा और स्वरूप, विज्ञापन के उद्देश्य, विज्ञापन माध्यम।

इकाई - 2 विज्ञापन लेखन : विज्ञापन कॉपी लेखन, विज्ञापन कॉपी के अंग, कॉपी लेखक के गुण

इकाई - 3 समाचार की परिभाषा और स्वरुप, समाचार के विभिन्न स्रोत, समाचार संकलन, समाचार लेखन

इकाई - 4 समाचार पत्र का प्रबंधन

पाठ्यक्रम अधिगम परिणाम

इस पाठ्यक्रम के पूर्ण करने के पश्चात् विद्यार्थिओं में

1. विज्ञापन लेखन के प्रति उनकी अभिरुचि विकसित होगी।
2. मीडिया उद्योग में वे अच्छे कॉपी लेखक बन सकेंगे। 3. समाचार लेखन में अभिरुचि विकसित होगी। 4. रोजगार की दृष्टि से मीडिया के क्षेत्र में संभावनाएं बढ़ेगी।
5. छात्र मीडिया के लिए महत्वपूर्ण व्यक्तियों के साक्षात्कार लेने में सक्षम हो सकेंगे।

अंक विभाजन –

प्रश्नपत्र में कुल 50 अंक होंगे। अंकों का वितरण निम्नानुसार होगा –

सेमेस्टर लिखित परीक्षा	प्रश्नों की सँख्या	अंक
	इकाई –1 एवं इकाई–3 से 03 प्रश्न शेष इकाइयों में से प्रत्येक से 02 प्रश्न (इनमें से कुल 05 प्रश्न हल करना होगा)	4 X 5 = 20
आंतरिक मूल्यांकन	कुल 05 प्रश्न हल करना होगा।	1 x 5=05
प्रोजेक्ट कार्य : 25	कॉपी लेखन एवं समाचार लेखन का प्रायोगिक परीक्षण	25
कुल अंक		50

संदर्भ पुस्तकें :

1. जनसंपर्क : प्रचार एवं विज्ञापन – विजय कुलश्रेष्ठ
2. हिंदी पत्रकारिता – डॉ. कृष्ण बिहारी

हस्ताक्षर अध्ययन मंडल

सत्र 2023-24

बी.ए.तृतीय सेमेस्टर

मूल पाठ्यक्रम (कोर कोर्स) हिंदी

आधुनिक हिंदी कविता : भारतेंदु-युग से छायावादी तथा छायावाद की समवर्ती कविता तक

पाठ्यक्रम कोड : BHN-CCH 301

क्रेडिट : 4

पूर्णांक : 80

पाठ्यक्रम का उद्देश्य :

1. इस पाठ का उद्देश्य है, भारतेंदु युगीन कविता, द्विवेदी युगीन कविता और छायावादी कविता के स्वरूप का विद्यार्थियों को ज्ञान कराना, ताकि छायावादी कविता के काल तक आते-आते कविता के भाषा-शिल्प और संवेदना के क्रमिक विकास को विद्यार्थी जान सकें।
2. भारतेंदु युग से छायावाद तक के काल की सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक एवं सांस्कृतिक स्थितियों एवं परिवेश से विद्यार्थियों का परिचय कराना।
3. तत्कालीन राजनीतिक, सांस्कृतिक आंदोलनों एवं उनके साहित्यिक रूपान्तरण के बारे जानकारी व परिचय।
4. राष्ट्रीय नवजागरण के परिदृश्य से अवगत कराना।
5. ब्रजभाषा से क्रमशः खड़ी बोली के कविता भाषा बनने और निखरने के इतिहास से अवगत कराना।
6. छायावादी काव्य संवेदना और अभिव्यक्ति सौंदर्य से परिचित हो सकेंगे।

पाठ्यक्रम की संरचना :

इकाई 1. हिंदी की आधुनिक कविता : ऐतिहासिक विकास :

i. भारतेंदु-पूर्व काव्यधारा तथा भारतेंदु युगीन परिवेश : सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक एवं राजनीतिक परिवेश, भारतेंदु युगीन काव्यधारा : सामाजिक चेतना, भक्ति भावना श्रृंगार प्रियता, प्रकृति प्रेम, राष्ट्रीय चेतना, समस्यापूर्ति, हास्य आदि।

ii. द्विवेदीयुगीन कविता की प्रमुख प्रवृत्तियाँ : राष्ट्रीयता, मानवता, नीति और आदर्श, वर्ण्य विषयों में विविधता और क्षेत्र-विस्तार, हास्य-व्यंग्य संबंधी काव्य, विभिन्न काव्य रूपों का प्रयोग, छंद-वैविध्य, भाषा सौष्ठव आदि।

iii. छायावाद तथा छायावाद युगीन समवर्ती राष्ट्रीय-सांस्कृतिक काव्यधारा : ऐतिहासिक विकास। छायावाद : नामकरण, पृष्ठभूमि और परिवेश, प्रमुख धाराएँ एवं प्रवृत्तियाँ।

Iv. छायावाद युगीन समवर्ती राष्ट्रीय-सांस्कृतिक काव्यधारा : पृष्ठभूमि तथा प्रवृत्तियाँ।

इकाई 2. भारतेंदुयुगीन कवि तथा उनकी रचनाएँ :

भारतेंदु हरिश्चंद्र (नये ज़माने की मुकरियाँ), प्रतापनारायण मिश्र (होलिका पंचक), चौधरी बदरीनारायण 'प्रेमघन' (भागो भागो अब काल पड़ा है भारी)

इकाई 3. द्विवेदीयुगीन एवं छायावादी कवि तथा उनकी रचनाएँ :

द्विवेदीयुगीन कवि –

मैथिलीशरण गुप्त (सखि वे मुझसे कहकर जाते), रामनरेश त्रिपाठी (किसान)।

छायावादी कवि –

जयशंकर प्रसाद (अशोक की चिंता), सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' (संध्या सुंदरी, जुही की कली) सुमित्रानंदन पंत (बादल, मोह), महादेवी वर्मा (मैं नीर भरी दुःख की बदली)।

इकाई 4. छायावाद युगीन समवर्ती राष्ट्रीय-सांस्कृतिक काव्यधारा के कवि तथा उनकी रचनाएँ :

माखनलाल चतुर्वेदी (बलिपंथी से, उलाहना, सांझ और ढोलक की थापें), सियारामशरण गुप्त (शंखनाद, संतोष), सुभद्रा कुमारी चौहान (मेरा नया बचपन, जलियाँवाला बाग़ में वसंत, तुम)।

पाठ्यक्रम का अधिगम परिणाम

1. इस पाठ के तीन खंड होंगे-भारतेंदु युगीन कविता, द्विवेदी युगीन कविता और छायावादी कविता । इस प्रकार 20वीं शताब्दी की शुरुआत के कुछ पूर्व से ही इस पाठ में विद्यार्थियों को कविता के स्वरूप का ज्ञान होगा। छायावादी कविता के काल तक आते-आते कविता की भाषा-शिल्प और संवेदना के क्रमिक विकास को विद्यार्थी जान सकेंगे।
2. भारतेंदु युग से छायावाद तक के काल की सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक एवं सांस्कृतिक स्थितियों एवं परिवेश से विद्यार्थी परिचित हो सकेंगे।
3. तत्कालीन राजनीतिक , सांस्कृतिक आंदोलनों एवं उनके साहित्यिक रूपान्तरण के बारे में जान सकेंगे।
4. राष्ट्रीय नवजागरण के परिदृश्य से परिचित हो सकेंगे।
5. ब्रजभाषा से क्रमशः खड़ी बोली के कविता भाषा बनने और निखरने के इतिहास से परिचित हो सकेंगे।
6. छायावादी काव्य संवेदना और अभिव्यक्ति सौंदर्य से परिचित हो सकेंगे।

अंक विभाजन –

प्रत्येक प्रश्नपत्र में तीन खण्ड (क. ख. तथा ग) होंगे। विद्यार्थियों से पाठ्यक्रम में निर्दिष्ट विषय-सामग्री का अध्ययन अपेक्षित है। प्रत्येक प्रश्न पत्र 80 अंकों का होगा। आंतरिक मूल्यांकन में 20 अंक होंगे।

क्र.	प्रश्न का प्रकार		अंक
खंड क	अति लघुत्तरी प्रश्न / वस्तुनिष्ठ प्रश्न (बहुविकल्पी प्रश्न नहीं होंगे)		2X10=20
खंड ख	लघुत्तरी प्रश्न (प्रत्येक 150 शब्द अधिकतम)		5X4=20
खंड ग	दीर्घ उत्तरी प्रश्न (350 शब्द अधिकतम) तथा व्याख्यात्मक प्रश्न	दीर्घ उत्तरी प्रश्न	8X2=16
		व्याख्या	8X3=24
सेमेस्टर परीक्षा		कुल अंक	80
आंतरिक मूल्यांकन		जाँच परीक्षा	10
		सत्रीय कार्य	10
		कुल अंक	20
पाठ्यक्रम में कुल अंक			100

सहायक ग्रंथ :

1. छायावाद का पतन : देवराज उपाध्याय
2. महावीर प्रसाद द्विवेदी और हिंदी नवजागरण : डॉ. रामविलास शर्मा
3. भारतेंदु हरिश्चंद्र और हिंदी नवजागरण : डॉ. रामविलास शर्मा
4. नवजागरण की समस्याएँ : डॉ. रामविलास शर्मा
5. छायावाद की प्रासंगिकता : रमेशचंद्र शाह

हस्ताक्षर अध्ययन मंडल

सत्र 2023-24

बी.ए. तृतीय सेमेस्टर

जेनेरिक पाठ्यक्रम (Generic Elective Course) हिंदी

आधुनिक हिंदी कविता : भारतेंदु-युग से छायावादी तथा छायावाद की समवर्ती कविता तक

पाठ्यक्रम कोड : BHN-GEC- 302

क्रेडिट : 4

पूर्णांक : 80

पाठ्यक्रम का उद्देश्य :

1. इस पाठ का उद्देश्य है, भारतेंदु युगीन कविता, द्विवेदी युगीन कविता और छायावादी कविता के स्वरूप का विद्यार्थियों को ज्ञान कराना, ताकि छायावादी कविता के काल तक आते-आते कविता के भाषा-शिल्प और संवेदना के क्रमिक विकास को विद्यार्थी जान सकें।
2. भारतेंदु युग से छायावाद तक के काल की सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक एवं सांस्कृतिक स्थितियों एवं परिवेश से विद्यार्थियों का परिचय कराना।
3. तत्कालीन राजनीतिक , सांस्कृतिक आंदोलनों एवं उनके साहित्यिक रूपान्तरण के बारे जानकारी से अवगत कराना।
4. राष्ट्रीय नवजागरण के परिदृश्य से अवगत कराना।
5. ब्रजभाषा से क्रमशः खड़ी बोली की कविता-भाषा बनने और निखरने के इतिहास से अवगत कराना।
6. छायावादी काव्य-संवेदना और अभिव्यक्ति सौंदर्य से परिचित हो सकेंगे।

पाठ्यक्रम की संरचना :

इकाई 1 . हिंदी की आधुनिक कविता : ऐतिहासिक विकास :

i . भारतेंदु-पूर्व काव्यधारा तथा भारतेंदु युगीन परिवेश : सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक एवं राजनीतिक परिवेश, भारतेंदु युगीन काव्यधारा : सामाजिक चेतना, भक्ति भावना श्रृंगार प्रियता, प्रकृति प्रेम, राष्ट्रीय चेतना, समस्यापूर्ति, हास्य आदि।

ii . द्विवेदीयुगीन कविता की प्रमुख प्रवृत्तियाँ : राष्ट्रीयता, मानवता, नीति और आदर्श, वर्ण्य विषयों में विविधता और क्षेत्र-विस्तार, हास्य-व्यंग्य संबंधी काव्य, विभिन्न काव्य रूपों का प्रयोग, छंद-वैविध्य, भाषा सौष्ठव आदि।

iii छायावाद तथा छायावाद युगीन समवर्ती राष्ट्रीय-सांस्कृतिक काव्यधारा : ऐतिहासिक विकास। छायावाद : नामकरण, पृष्ठभूमि और परिवेश, प्रमुख धाराएँ एवं प्रवृत्तियाँ।

iv . छायावाद युगीन समवर्ती राष्ट्रीय-सांस्कृतिक काव्यधारा : पृष्ठभूमि तथा प्रवृत्तियाँ।

इकाई 3. द्विवेदीयुगीन एवं छायावादी कवि तथा उनकी रचनाएँ :

द्विवेदीयुगीन कवि –

मैथिलीशरण गुप्त (सखि वे मुझसे कहकर जाते), रामनरेश त्रिपाठी (किसान)।

छायावादी कवि –

जयशंकर प्रसाद (अशोक की चिंता), सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' (संध्या सुंदरी, जुही की कली) सुमित्रानंदन पंत (बादल, मोह), महादेवी वर्मा (मैं नीर भरी दु:ख की बदली)।

इकाई 4. छायावाद युगीन समवर्ती राष्ट्रीय-सांस्कृतिक काव्यधारा के कवि तथा उनकी रचनाएँ :

माखनलाल चतुर्वेदी (बलिपंथी से, उलाहना, सांझ और ढोलक की थापें), सियारामशरण गुप्त (शंखनाद, संतोष), सुभद्रा कुमारी चौहान (मेरा नया बचपन, जलियाँवाला बाग़ में वसंत, तुम)।

पाठ्यक्रम का अधिगम परिणाम

1. इस पाठ के तीन खंड होंगे–भारतेंदु युगीन कविता, द्विवेदी युगीन कविता और छायावादी कविता । इस प्रकार 20वीं शताब्दी की शुरुआत के कुछ पूर्व से ही इस पाठ में विद्यार्थियों को कविता के स्वरूप का ज्ञान होगा। छायावादी कविता के काल तक आते-आते कविता की भाषा-शिल्प और संवेदना के क्रमिक विकास को विद्यार्थी जान सकेंगे।
2. भारतेंदु युग से छायावाद तक के काल की सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक एवं सांस्कृतिक स्थितियों एवं परिवेश से विद्यार्थी परिचित हो सकेंगे।
3. तत्कालीन राजनीतिक , सांस्कृतिक आंदोलनों एवं उनके साहित्यिक रूपान्तरण के बारे में जान सकेंगे।
4. राष्ट्रीय नवजागरण के परिदृश्य से परिचित हो सकेंगे।
5. ब्रजभाषा से क्रमशः खड़ी बोली के कविता भाषा बनने और निखरने के इतिहास से परिचित हो सकेंगे।
6. छायावादी काव्य संवेदना और अभिव्यक्ति सौंदर्य से परिचित हो सकेंगे।

अंक विभाजन –

प्रत्येक प्रश्नपत्र में तीन खण्ड (क. ख. तथा ग) होंगे। विद्यार्थियों से पाठ्यक्रम में निर्दिष्ट विषय-सामग्री का अध्ययन अपेक्षित है। प्रत्येक प्रश्न पत्र 80 अंकों का होगा। आंतरिक मूल्यांकन में 20 अंक होंगे।

क्र.	प्रश्न का प्रकार		अंक
खंड क	अति लघुत्तरी प्रश्न / वस्तुनिष्ठ प्रश्न (बहुविकल्पी प्रश्न नहीं होंगे)		2X10=20
खंड ख	लघुत्तरी प्रश्न (प्रत्येक 150 शब्द अधिकतम)		5X4=20
खंड ग	दीर्घ उत्तरी प्रश्न (350 शब्द अधिकतम) तथा व्याख्यात्मक प्रश्न	दीर्घ उत्तरी प्रश्न	8X2=16
		व्याख्या	8X3=24
सेमेस्टर परीक्षा		कुल अंक	80
आंतरिक मूल्यांकन		जाँच परीक्षा	10
		सत्रीय कार्य	10
		कुल अंक	20
पाठ्यक्रम में कुल अंक			100

सहायक ग्रंथ :

1. छायावाद का पतन : देवराज उपाध्याय
2. महावीर प्रसाद द्विवेदी और हिंदी नवजागरण : डॉ. रामविलास शर्मा
3. भारतेंदु हरिश्चंद्र और हिंदी नवजागरण : डॉ. रामविलास शर्मा
4. नवजागरण की समस्याएँ : डॉ. रामविलास शर्मा
5. छायावाद की प्रासंगिकता : रमेशचंद्र शाह

हस्ताक्षर अध्ययन मंडल

सत्र 2023-24

बी.ए.तृतीय सेमेस्टर

विषय केंद्रित पाठ्यक्रम (Discipline Specific Elective, DES), हिंदी

लोक साहित्य

पाठ्यक्रम कोड : BHN-DES-303

क्रेडिट : 4

पूर्णांक : 80

पाठ्यक्रम का उद्देश्य-

पाठ्यक्रम का **उद्देश्य** निम्नवत होगा-

1.विद्यार्थियों को वर्तमान वैश्वीकरण के युग में अपने अंचल विशेष के प्रभावी रूप से लेकर वैश्विक संदर्भ से जोड़ना।

2 .विद्यार्थियों को लोक साहित्य की भाव गंभीरता, सांस्कृतिक रूप और सहज अभिव्यक्ति का परिचय प्रदान करना।

प्रस्तावित संरचना -

इकाई-1

लोक साहित्य: परिभाषा और स्वरूप, लोक साहित्य संकलन: उद्देश्य, पद्धतियां, समस्याएं और समाधान।

इकाई-2

लोक साहित्य के लोक तत्व, लोक कथा का स्वरुप और महत्व।

इकाई-3

लोकगीत का स्वरुप और महत्व।

इकाई-4

लोक नाट्य परंपरा : नौटंकी, लोक साहित्य में नैतिकता और प्रेम संदर्भ।

पाठ्यक्रम का अधिगम परिणाम

पाठ्यक्रम का अधिगम परिणाम निम्नवत होगा-

1.विद्यार्थी वर्तमान युग में अपने अंचल विशेष के प्रभावी रूप से लेकर वैश्विक संदर्भ से जुड़ सकेंगे।

2 .विद्यार्थियों को लोक साहित्य के भावपक्ष, सांस्कृतिक रूप और सहज अभिव्यक्ति का परिचय प्राप्त हो सकेगा।

अंक विभाजन -

प्रत्येक प्रश्नपत्र में तीन खण्ड (क. ख. तथा ग) होंगे। विद्यार्थियों से पाठ्यक्रम में निर्दिष्ट विषय-सामग्री का अध्ययन अपेक्षित है। प्रत्येक प्रश्न पत्र 80 अंकों का होगा। आंतरिक मूल्यांकन में 20 अंक होंगे।

क्र.	प्रश्न का प्रकार		अंक
खंड क	अति लघुत्तरी प्रश्न / वस्तुनिष्ठ प्रश्न (बहुविकल्पी प्रश्न नहीं होंगे)		2X10=20
खंड ख	लघुत्तरी प्रश्न (प्रत्येक 150 शब्द अधिकतम)		5X4=20
खंड ग	दीर्घ उत्तरी प्रश्न (350 शब्द अधिकतम) तथा व्याख्यात्मक प्रश्न	दीर्घ उत्तरी प्रश्न	8X5 =40
सेमेस्टर परीक्षा		कुल अंक	80
आंतरिक मूल्यांकन		जाँच परीक्षा	10
		सत्रीय कार्य	10
		कुल अंक	20
पाठ्यक्रम में कुल अंक			100

सहायक ग्रंथ-

1. भारत के लोक नाट्य - शिवकुमार माथुर
2. लोकधर्मी नाट्य परंपरा - श्याम परमार
3. लोक साहित्य की भूमिका - कृष्णदेव उपाध्याय
4. लोक साहित्य की भूमिका - रामनरेश त्रिपाठी
5. लोक संस्कृति - वसंत निरगुणे
6. लोक साहित्य का अवगमन - त्रिलोचन पांडेय
7. लोक साहित्य विज्ञान - डॉ सत्येंद्र
8. भारतीय लोक साहित्य की रूपरेखा - दुर्गा भागवत
9. लोक जीवन के कलात्मक आया - कालूराम परिहार
10. लोक साहित्य सिद्धांत और प्रयोग - श्रीराम शर्मा
11. लोक साहित्य का वृहद इतिहास - कृष्णदेव उपाध्याय

सत्र 2023-24

बी.ए./बी.एससी./बी.कॉम तृतीय सेमेस्टर

क्षमता संवर्द्धन पाठ्यक्रम (Ability Enhancement Course , AEC)

रचना-कौशल

पाठ्यक्रम कोड : BHN-DES- 304

क्रेडिट :2

पूर्णांक : 40

पाठयक्रम का उद्देश्य -

पाठयक्रम के इस अंश का अधिगम परिणाम निम्नवत होगा-

1. विद्यार्थियों में भावों और विचारों को अभिव्यक्त करने की क्षमता विकसित हो सकेगी।
2. व्याकरण की दृष्टि से वे सही वाक्य लिख सकेंगे।
3. विद्यार्थी लेखन कला सीख सकेंगे।
4. विद्यार्थियों में भाषिक सृजनात्मक

प्रस्तावित संरचना -

इकाई-1

रचना से तात्पर्य, रचना-शिक्षण के उद्देश्य, एवं महत्त्व, नियंत्रित एवं स्वतंत्र रचना, रचना के प्रकार (मौखिक एवं लिखित, व्यावहारिक एवं पुनर्रचनात्मक)। इन बिंदुओं पर सूचनात्मक तथा सामान्य रूप से परिचयात्मक जानकारी अपेक्षित है।

रचना की तैयारी (विषय का ज्ञान, विषय का सीमा-निर्धारण, सामग्री का एकत्रीकरण एवं नियोजन)।

इकाई-2

व्यावहारिक लेखन (नोट्स लेखन, संक्षेपण एवं सार लेखन, पल्लवन, रिपोर्ट लेखन का परिचय, उनके स्वरूप तथा उनका व्यावहारिक तथा प्रयोगात्मक अध्ययन)

इकाई-3

पुनर्रचनात्मक लेखन (सृजनात्मक और वर्णनात्मक लेखन)

सृजनात्मक लेखन (साहित्य की विभिन्न विधाएँ-कविता, कहानी, निबंध, नाटक, एकांकी, उपन्यास, रेखाचित्र, संस्मरण, आत्मकथा आदि) इनका उल्लेख और सामान्य परिचय मात्र अपेक्षित है।

वर्णनात्मक लेखन (व्यक्ति का वर्णन, दृश्य का वर्णन, स्थिति या दशा का वर्णन का व्यावहारिक अध्ययन)

इकाई-4

प्रभावी लेखन (प्रभावी लेखन की अवधारणा तथा उसका उद्देश्य, विषयवस्तु के स्तर पर प्रभावी लेखन, शिल्प के स्तर पर प्रभावी लेखन) प्रभावी रचना-कौशल के विकास के लिए क्रियाकलाप अपेक्षित है।

पाठयक्रम के इस अंश का अधिगम परिणाम निम्नवत होगा–

1. विद्यार्थियों में भावों और विचारों को अभिव्यक्त करने की क्षमता विकसित हो सकेगी।
2. व्याकरण की दृष्टि से वे सही वाक्य लिख सकेंगे।
3. विद्यार्थी लेखन– कला सीख सकेंगे l

अंक विभाजन

प्रत्येक प्रश्नपत्र में तीन खण्ड (क. ख. तथा ग) होंगे। विद्यार्थियों से पाठ्यक्रम में निर्दिष्ट विषय सामग्री का अध्ययन अपेक्षित है।

क्र.	प्रश्न का प्रकार	अंक
खंड क	अति लघुत्तरी /वस्तुनिष्ठ प्रश्न (बहुविकल्पी प्रश्न नहीं होंगे)	1 X10=10
खंड ख	लघुत्तरी प्रश्न (प्रत्येक 150 शब्द अधिकतम)	2 X 5 =10
खंड ग	दीर्घ उत्तरी प्रश्न (प्रत्येक 350 शब्द अधिकतम)	4 X5 =20
आंतरिक मूल्यांकन (सेमेस्टर परीक्षा के पैटर्न के अनुसार)		10
कुल अंक		50

सहायक ग्रंथ–

1. रचनात्मक लेखन – रमेश गौतम
2. हिंदी वाक्य विन्यास – सुधा कश्यप
3. संचार भाषा हिंदी – सूर्यप्रसाद दीक्षित

• हस्ताक्षर अध्ययन मण्डल :–

बी.ए./बी.एससी./बी.कॉम तृतीय सेमेस्टर
कौशल संवर्धन पाठ्यक्रम (स्किल एन्हांसमेंट कोर्स), हिंदी
कार्यालयीन भाषा-अनुप्रयोग
पाठ्यक्रम कोड: SECH- 305

क्रेडिट: 02

कुल अंक : 50

पाठ्यक्रम का उद्देश्य -

इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य है, विद्यार्थियों को -

1. कार्यालयीन भाषा के रूप में हिंदी के प्रकार्यात्मक पक्ष की सम्यक जानकारी से अवगत कराना।
2. हिंदी में कार्यालयीन कामकाज की पध्दति और प्रक्रिया से अवगत कराना।
3. हिंदी में पत्राचार और टिप्पण के व्यावहारिक पक्षों की जानकारी देना ज्ञान कराना।
4. बैंकिंग, कार्यालयीन, दूरसंचार, व्यवसाय और कानून की शब्दावली का ज्ञान कराना।

पाठ्यक्रम विवरण -

इकाई -1

कार्यालयीन भाषा प्रारूपण (पत्राचार, कार्यालय ज्ञापन , कार्यालय आदेश, परिपत्र, अधिसूचना, अर्धशासकीय पत्र आवेदन पत्र, प्रतिवेदन, अनुस्मारक पृष्ठांकन, शासकीय संकल्प)।

इकाई-2

टिप्पण -प्रक्रिया एवं स्वरूप, व्यावहारिक अनुप्रयोग।

संक्षेपण-प्रक्रिया एवं स्वरूप -कार्यालयीन अनुप्रयोग। पारिभाषिक शब्दावली - स्वरूप, प्रक्रिया एवं महत्व।

इकाई- 3

अनुवाद का स्वरूप -प्रक्रिया, प्रविधि एवं महत्व। कार्यालयीन हिंदी और अनुवाद।

इकाई- 04

अनुवाद का प्रकार्यात्मक महत्व जनसंचार विज्ञान, तकनीकी, बैंकिंग, वाणिज्य, विधि आदि क्षेत्रों में अनुवाद की भूमिका।

प्रायोगिक ज्ञान/प्रोजेक्ट :

विद्यार्थियों को पाठ्यक्रम के आधार पर प्रारूपण, टिप्पण एवं अनुवाद से संबंधित प्रोजेक्ट कार्य कर प्रतिवेदन प्रस्तुत करना होगा।

1. कार्यालयीन पत्राचार, टिप्पण एवं अनुवाद।
2. अनुवाद दक्षता का व्यावहारिक परीक्षण ।

पाठ्यक्रम का अधिगम परिणाम :

इस पाठ्यक्रम का अध्ययन करने के उपरांत विद्यार्थियों को–

1. राजभाषा के रूप में हिंदी के प्रकार्यात्मक पक्ष की सम्यक जानकारी प्राप्त होगी।
2. हिंदी में कार्यालयीन कामकाज की पद्धति और प्रक्रिया का समुचित ज्ञान होगा।
3. हिंदी में पत्राचार और टिप्पण के व्यावहारिक पक्षों की जानकारी प्राप्त होगी।
4. बैंकिंग, कार्यालयीन, दूरसंचार, व्यवसाय और कानून की शब्दावली का ज्ञान होगा।
5. कार्यालयीन कामकाज में अनुवाद के प्रयोग का सामान्य ज्ञान हो सकेगा।

अंक विभाजन –

प्रश्नपत्र में कुल 50 अंक होंगे। अंकों का वितरण निम्नानुसार होगा –

सेमेस्टर लिखित परीक्षा	प्रश्नों की सँख्या	अंक
	इकाई –1 एवं इकाई–3 से 03 प्रश्न शेष इकाइयों में से प्रत्येक से 02 प्रश्न (इनमें से कुल 05 प्रश्न हल करना होगा)	4 X 5 = 20
आंतरिक मूल्यांकन	कुल 05 प्रश्न हल करना होगा।	1 x 5=05
प्रोजेक्ट कार्य : 25	प्रारूपण, टिप्पण एवं अनुवाद	25
कुल अंक		50

सन्दर्भ पुस्तकें :

1. कार्यालयीन हिंदी की प्रकृति – चंद्रपाल शर्मा
2. सरकारी कार्यालयों में हिंदी का प्रयोग – गोपीनाथ श्रीवास्तव
3. आधुनिक हिंदी व्याकरण और रचना – डॉ. वासुदेवनंदन प्रसाद)
4. प्रयोजनमूलक हिंदी – विनोद गोदरे
5. प्रयोजनमूलक हिंदी – माधव सोनटक्के
6. प्रयोजनमूलक हिंदी – डॉ. संजीव जैन

सत्र 2023-24

बी.ए.चतुर्थ सेमेस्टर

मूल पाठ्यक्रम (कोर कोर्स) हिंदी

हिंदी साहित्य : प्रगतिवाद से बीसवीं शताब्दी तक

पाठ्यक्रम कोड : BHN-CCH 401

क्रेडिट :4

पूर्णांक : 80

पाठ्यक्रम का उद्देश्य :

1. उत्तर छायावाद युग की सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक एवं राजनीतिक परिस्थितियों एवं विसंगतियों से उपजे काव्यान्दोलनों से विद्यार्थियों को अवगत कराना।
2. प्रगतिशील साहित्य-दृष्टि के वैचारिक आधार और अभिप्राय की स्पष्ट रूप से जानकारी देना।
3. इतिहास दृष्टि और लोकजीवन तथा प्रकृति से कविता के सरोकार को रेखांकित करना।
4. प्रयोगवादी काव्य की रचनात्मक प्राथमिकताओं, भावबोध और भाषा को समझने की दृष्टि विकसित करना।
5. समकालीन कविता के युगबोध को वस्तुगत, सामाजिक, आर्थिक परिप्रेक्ष्य सहित समझने में विद्यार्थियों को सक्षम बनाना।
6. वैश्वीकरण और भूमण्डलीकरण के परिप्रेक्ष्य और चुनौतियों को समझने का आधार प्रदान करना।

पाठ्यक्रम की संरचना :

इकाई 1. छायावादोत्तर काव्य परिदृश्य और छायावादोत्तर कविता की भूमिका :

i. उत्तर-छायावाद, प्रगतिवाद, प्रयोगवाद, नई कविता, अकविता, समकालीन कविता (1980 के बाद की कविता) के ऐतिहासिक विकास का सामान्य परिचय ।

ii. भाव बोध और काव्य भाषा में बदलाव के संदर्भ, छायावादोत्तर काव्यधारा प्रमुख प्रवृत्तियाँ, छायावादोत्तर गीतधारा एवं प्रमुख कवि।

iii. छायावादोत्तर कविता में यथार्थदृष्टि के उदय का परिचयात्मक विवरण (संदर्भ-निराला की यथार्थ दृष्टि-सम्पन्न कविताएँ और पंत का उत्तर छायावादी काव्य : निराला और पंत का प्रगतिवादी स्वर)।

इकाई 2. प्रगतिवादी काव्यधारा एवं उसके प्रमुख कवियों की रचनाएँ :

i. छायावादी काव्यधारा से संबद्ध कवि : सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' (हिन्दी के सुमनों के प्रति पत्र, तोड़ती पत्थर, भिक्षुक) सुमित्रानन्दन पंत (ताज, श्रमजीवी, ग्रामश्री)।

ii. मूलतः प्रगतिवादी कवि : केदारनाथ अग्रवाल (वह चिड़िया जो, एक हथौड़ेवाला घर में और हुआ,

आज नदी बिलकुल उदास थी) नागार्जुन (अकाल और उसके बाद, सिंदूर तिलकित भाल, बहुत दिनों के बाद) त्रिलोचन (तुलसी बाबा, भाषा मैंने तुम से सीखी; चंपा काले काले अच्छर नहीं चीन्हती, उस जनपद का कवि हूँ)।

इकाई 3 . प्रयोगवादी काव्यधारा , नयी कविता,अकविता का ऐतिहासिक परिदृश्य, काव्य प्रवृत्तियाँ और प्रमुख कवियों की रचनाएँ :

सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय' (नदी के द्वीप, क्योंकि तुम हो, सवेरे उठा तो धूप खिल कर छा गई थी) , गजानन माधव मुक्तिबोध (भूल ग़लती, ब्रह्मराक्षस), रघुवीर सहाय (रामदास, किताब पढ़कर रोना)।

इकाई 4. समकालीन कविता का परिदृश्य और उसके प्रमुख कवियों की रचनाएँ :

श्रीकांत वर्मा (दो चिड़ियों का गान, मगध), केदारनाथ सिंह (बनारस, रोटी), विनोद कुमार शुक्ल (हताशा से एक व्यक्ति बैठ गया था, कितना बहुत है), राजेश जोशी (मारे जाएँगे, नाना की साईकिल), अरुण कमल(उत्सव, डेली पैसेंजर)।

पाठ्यक्रम का अधिगम परिणाम :

1. उत्तर छायावाद युग की सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक एवं राजनीतिक परिस्थितियों एवं विसंगतियों से उपजे काव्यान्दोलनों से विद्यार्थी परिचित हो सकेंगे।
2. प्रगतिशील का वैचारिक आधार और अभिप्राय स्पष्ट रूप से जान सकेंगे।
3. इतिहास दृष्टि और लोकजीवन तथा प्रकृति से कविता के सरोकार को रेखांकित कर सकेंगे।
4. प्रयोगवादी काव्य की रचनात्मक प्राथमिकताओं, भावबोध और भाषा को समझ सकेंगे।
5. समकालीन कविता के युगबोध को वस्तुगत, सामाजिक, आर्थिक परिप्रेक्ष्य सहित समझ सकेंगे।
6. वैश्वीकरण और भूमण्डलीकरण के परिप्रेक्ष्य और चुनौतियों को समझने का आधार मिलेगा।

अंक विभाजन –

प्रत्येक प्रश्नपत्र में तीन खण्ड (क. ख. तथा ग) होंगे। विद्यार्थियों से पाठ्यक्रम में निर्दिष्ट विषय-सामग्री का अध्ययन अपेक्षित है। प्रत्येक प्रश्न पत्र 80 अंकों का होगा। आंतरिक मूल्यांकन में 20 अंक होंगे।

क्र.	प्रश्न का प्रकार		अंक
खंड क	अति लघुत्तरी प्रश्न / वस्तुनिष्ठ प्रश्न (बहुविकल्पी प्रश्न नहीं होंगे)		2X10=20
खंड ख	लघुत्तरी प्रश्न (प्रत्येक 150 शब्द अधिकतम)		5X4=20
खंड ग	दीर्घ उत्तरी प्रश्न (350 शब्द अधिकतम) तथा व्याख्यात्मक प्रश्न	दीर्घ उत्तरी प्रश्न	8X2=16
		व्याख्या	8X3=24
सेमेस्टर परीक्षा		कुल अंक	80
आंतरिक मूल्यांकन		जाँच परीक्षा	10
		सत्रीय कार्य	10
		कुल अंक	20
पाठ्यक्रम में कुल अंक			100

सहायक ग्रंथ :

1. नयी कविता : सीमाएं और संभावनाए – गिरजाकुमार माथुर
2. नयी कविता स्वरूप एवं समस्याएँ – जगदीश गुप्त
3. समकालीन हिंदी साहित्य विविध परिदृश्य – रामस्वरूप चतुर्वेदी
4. आधुनिक हिंदी साहित्य विविध आयाम – रामचंद्र तिवारी
5. प्रगतिवाद – रामविलास शर्मा
6. प्रगतिशील साहित्य की समस्याएँ – रामविलास शर्मा

हस्ताक्षर अध्ययन मंडल

सत्र 2023-24

बी.ए.चतुर्थ सेमेस्टर

जेनेरिक पाठ्यक्रम (GEC), हिंदी

हिंदी साहित्य : प्रगतिवाद से बीसवीं शताब्दी तक

पाठ्यक्रम कोड : BHN-CCH 402

क्रेडिट :4

पूर्णांक : 80

पाठ्यक्रम का उद्देश्य :

1. उत्तर छायावाद युग की सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक एवं राजनीतिक परिस्थितियों एवं विसंगतियों से उपजे काव्यान्दोलनों से विद्यार्थियों को अवगत कराना।
2. प्रगतिशील साहित्य-दृष्टि के वैचारिक आधार और अभिप्राय की स्पष्ट रूप से जानकारी देना।
3. इतिहास दृष्टि और लोकजीवन तथा प्रकृति से कविता के सरोकार को रेखांकित करना।
4. प्रयोगवादी काव्य की रचनात्मक प्राथमिकताओं, भावबोध और भाषा को समझने की दृष्टि विकसित करना।
5. समकालीन कविता के युगबोध को वस्तुगत, सामाजिक, आर्थिक परिप्रेक्ष्य सहित समझने में विद्यार्थियों को सक्षम बनाना।
6. वैश्वीकरण और भूमण्डलीकरण के परिप्रेक्ष्य और चुनौतियों को समझने का आधार प्रदान करना।

पाठ्यक्रम की संरचना :

इकाई 1. छायावादोत्तर काव्य परिदृश्य और छायावादोत्तर कविता की भूमिका :

i. उत्तर-छायावाद, प्रगतिवाद, प्रयोगवाद, नई कविता, अकविता, समकालीन कविता (1980 के बाद की कविता) के ऐतिहासिक विकास का सामान्य परिचय ।

ii. भाव बोध और काव्य भाषा में बदलाव के संदर्भ, छायावादोत्तर काव्यधारा प्रमुख प्रवृत्तियाँ, छायावादोत्तर गीतधारा एवं प्रमुख कवि।

iii. छायावादोत्तर कविता में यथार्थदृष्टि के उदय का परिचयात्मक विवरण (संदर्भ-निराला की यथार्थ दृष्टि-सम्पन्न कविताएँ और पंत का उत्तर छायावादी काव्य : निराला और पंत का प्रगतिवादी स्वर)।

इकाई 2. प्रगतिवादी काव्यधारा एवं उसके प्रमुख कवियों की रचनाएँ :

i. छायावादी काव्यधारा से संबद्ध कवि : सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' (हिन्दी के सुमनों के प्रति पत्र, तोड़ती पत्थर, भिक्षुक) सुमित्रानन्दन पंत (ताज, श्रमजीवी, ग्रामश्री)।

ii .मूलतः प्रगतिवादी कवि : केदारनाथ अग्रवाल (वह चिड़िया जो, एक हथौड़ेवाला घर में और हुआ, आज नदी बिलकुल उदास थी) नागार्जुन (अकाल और उसके बाद, सिंदूर तिलकित भाल, बहुत दिनों के बाद) त्रिलोचन (तुलसी बाबा, भाषा मैंने तुम से सीखी; चंपा काले काले अच्छर नहीं चीन्हती, उस जनपद का कवि हूँ)।

इकाई 3 . प्रयोगवादी काव्यधारा , नयी कविता,अकविता का ऐतिहासिक परिदृश्य, काव्य-प्रवृत्तियाँ और प्रमुख कवियों की रचनाएँ :

सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय' (नदी के द्वीप, क्योंकि तुम हो, सवेरे उठा तो धूप खिली थी) , गजानन माधव मुक्तिबोध (भूल ग़लती, ब्रह्मराक्षस), रघुवीर सहाय (रामदास, किताब पढ़कर रोना)।

इकाई 4. समकालीन कविता का परिदृश्य और उसके प्रमुख कवियों की रचनाएँ :

श्रीकांत वर्मा (दो चिड़ियों का गान, मगध), केदारनाथ सिंह (बनारस, रोटी), विनोद कुमार शुक्ल (हताशा से एक व्यक्ति बैठ गया था, कितना बहुत है), राजेश जोशी (मारे जाएँगे, नाना की साईकिल), अरुण कमल(उत्सव, डेली पैसेंजर)।

पाठ्यक्रम का अधिगम परिणाम :

1. उत्तर छायावाद युग की सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक एवं राजनीतिक परिस्थितियों एवं विसंगतियों से उपजे काव्यान्दोलनों से विद्यार्थी परिचित हो सकेंगे।
2. प्रगतिशील काव्य का वैचारिक आधार और अभिप्राय स्पष्ट रूप से जान सकेंगे।
3. इतिहास दृष्टि और लोकजीवन तथा प्रकृति से कविता के सरोकार को रेखांकित कर सकेंगे।
4. प्रयोगवादी काव्य की रचनात्मक प्राथमिकताओं, भावबोध और भाषा को समझ सकेंगे।
5. समकालीन कविता के युगबोध को वस्तुगत, सामाजिक, आर्थिक परिप्रेक्ष्य सहित समझ सकेंगे।
6. वैश्वीकरण और भूमण्डलीकरण के परिप्रेक्ष्य और चुनौतियों को समझने का आधार मिलेगा।

अंक विभाजन –

प्रत्येक प्रश्नपत्र में तीन खण्ड (क. ख. तथा ग) होंगे। विद्यार्थियों से पाठ्यक्रम में निर्दिष्ट विषय–सामग्री का अध्ययन अपेक्षित है। प्रत्येक प्रश्न पत्र 80 अंकों का होगा। आंतरिक मूल्यांकन में 20 अंक होंगे।

क्र.	प्रश्न का प्रकार		अंक
खंड क	अति लघुत्तरी प्रश्न / वस्तुनिष्ठ प्रश्न (बहुविकल्पी प्रश्न नहीं होंगे)		2X10=20
खंड ख	लघुत्तरी प्रश्न (प्रत्येक 150 शब्द अधिकतम)		5X4=20
खंड ग	दीर्घ उत्तरी प्रश्न (350 शब्द अधिकतम) तथा व्याख्यात्मक प्रश्न	दीर्घ उत्तरी प्रश्न	8X2=16
		व्याख्या	8X3=24
सेमेस्टर परीक्षा		कुल अंक	80
आंतरिक मूल्यांकन		जाँच परीक्षा	10
		सत्रीय कार्य	10
		कुल अंक	20
पाठ्यक्रम में कुल अंक			100

सहायक ग्रंथ :

1. नयी कविता : सीमाएँ और संभावनाएँ – गिरजाकुमार माथुर
2. नयी कविता स्वरूप एवं समस्याएँ – जगदीश गुप्त
3. समकालीन हिंदी साहित्य विविध परिदृश्य – रामस्वरूप चतुर्वेदी
4. आधुनिक हिंदी साहित्य विविध आयाम – रामचंद्र तिवारी
5. प्रगतिवाद – रामविलास शर्मा
6. प्रगतिशील साहित्य की समस्याएँ – रामविलास शर्मा

हस्ताक्षर अध्ययन मंडल

सत्र 2023-24

बी.ए.चतुर्थ सेमेस्टर

विषय केंद्रित पाठ्यक्रम (Discipline Specific Elective, DES) हिंदी

छत्तीसगढ़ी लोक साहित्य

पाठ्यक्रम कोड : BHN-DES-403

क्रेडिट : 4

पूर्णांक : 80

पाठ्यक्रम का उद्देश्य -

इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों को

1. लोक साहित्य की सैद्धांतिक जानकारी प्राप्त करना ।
2. छत्तीसगढ़ी लोक- साहित्य एवं संस्कृति के अंतर्संबंध को समझना।
3. छत्तीसगढ़ी लोक -साहित्य की परंपरा एवं विरासत से अवगत कराना।

पाठ्यक्रम विवरण :

इकाई 1

लोक साहित्य अवधारणा, अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्त्व लोकवार्ता और लोक - संस्कृति, लोक- संस्कृति और साहित्य ।

इकाई 2

छत्तीसगढ़ी साहित्य में लोकतत्व, वर्तमान अभिजात साहित्य और लोक- साहित्य का अंतर्सम्बन्ध । छत्तीसगढ़ी लोक - साहित्य की परंपरा ।

इकाई 3

छत्तीसगढ़ी लोक -साहित्य के विविध रुप, छत्तीसगढ़ी लोक-गीत के विविध रूप। छत्तीसगढ़ी विविध लोक-कथाएँ।

इकाई 4

लोक नाट्य, लोक गाथा।

पाठ्यक्रम अधिगम परिणाम-

इस पाठ्यक्रम का अध्ययन करने के उपरांत विद्यार्थी

1. लोक साहित्य की सैद्धांतिक जानकारी प्राप्त करेंगे
2. लोक साहित्य के महत्व को समझ सकेंगे ।

3 छत्तीसगढ़ी लोक संस्कृति तथा लोक- साहित्य की परंपरा एवं विरासत को सहेजने के प्रति जागरुक होंगे।

अंक विभाजन –

प्रत्येक प्रश्नपत्र में तीन खण्ड (क. ख. तथा ग) होंगे। विद्यार्थियों से पाठ्यक्रम में निर्दिष्ट विषय-सामग्री का अध्ययन अपेक्षित है। प्रत्येक प्रश्न पत्र 80 अंकों का होगा। आंतरिक मूल्यांकन में 20 अंक होंगे।

क्र.	प्रश्न का प्रकार		अंक
खंड क	अति लघुत्तरी प्रश्न / वस्तुनिष्ठ प्रश्न (बहुविकल्पी प्रश्न नहीं होंगे)		2X10=20
खंड ख	लघुत्तरी प्रश्न (प्रत्येक 150 शब्द अधिकतम)		5X4=20
खंड ग	दीर्घ उत्तरी प्रश्न (350 शब्द अधिकतम) तथा व्याख्यात्मक प्रश्न	दीर्घ उत्तरी प्रश्न	8X5 =40
सेमेस्टर परीक्षा		कुल अंक	80
आंतरिक मूल्यांकन		जाँच परीक्षा	10
		सत्रीय कार्य	10
		कुल अंक	20
पाठ्यक्रम में कुल अंक			100

सहायक ग्रंथ–

1. भारत के लोक नाट्य – शिवकुमार माथुर
2. लोकधर्मी नाट्य परंपरा – श्याम परमार
3. लोक साहित्य की भूमिका – कृष्णदेव उपाध्याय
4. लोक साहित्य की भूमिका – रामनरेश त्रिपाठी
5. लोक संस्कृति – वसंत निरगुणे
6. लोक साहित्य का अवगमन – त्रिलोचन पांडेय
7. लोक साहित्य विज्ञान – डॉ सत्येंद्र
8. भारतीय लोक साहित्य की रूपरेखा – दुर्गा भागवत
9. लोक जीवन के कलात्मक आयाम – कालूराम परिहार
10. लोक साहित्य सिद्धांत और प्रयोग – श्रीराम शर्मा

11.लोक साहित्य का वृहद इतिहास - कृष्णदेव उपाध्याय
12. छत्तीसगढ़ी लोक साहित्य का अध्ययन डॉ. दयाशंकर शुक्ल - वैभव प्रकाशन, रायपुर
13 . छत्तीसगढ़ी लोक- जीवन और साहित्य का अध्ययन - डॉ शंकुतला वर्मा, रचना प्रकाशन,
14. छत्तीसगढ़ी गीत - जमुनाप्रसाद कसार श्री प्रकाशन, दुर्ग
15. छत्तीसगढ़ी भाषा एवं लोक साहित्य डॉ. बिहारी लाल साहू - वैभव प्रकाशन, रायपुर
16. छत्तीसगढ़ी लोकनाट्य नाचा - महावीर अग्रवाल, श्री प्रकाशन, दुर्ग *
छत्तीसगढ़ी लोक साहित्य और रंगकर्म - डॉ. उषा वैरागकर आठले श्री प्रकाशन, दुर्ग

हस्ताक्षर अध्ययन मंडल

सत्र 2023-24

बी.ए./बी.एससी./बी.कॉम चतुर्थ सेमेस्टर

कौशल संवर्धन पाठ्यक्रम (स्किल एन्हांसमेंट कोर्स)

विज्ञापन और समाचार लेखन

पाठ्यक्रम कोड: SECH-404

पूर्णांक : 40

केडिट : 02

पाठ्यक्रम का उद्देश्य-

इस पाठ्यक्रम का -उदेश्य है विद्यार्थियों को-

1. विज्ञापन- लेखन की कला से अवगत कराना।
2. मीडिया उद्योग के सम्बन्ध में जानकारी देना।
3. समाचार लेखन- कला का ज्ञान कराना।
4. मीडिया के क्षेत्र में रोजगार की संभावनाओं से अवगत कराना।
5. साक्षात्कारकर्ता के रूप में विद्यार्थियों को तैयार करना।

पाठ्यक्रम विवरण-

इकाई-1 विज्ञापन की परिभाषा और स्वरूप, विज्ञापन के उद्देश्य, विज्ञापन माध्यम।

इकाई - 2 विज्ञापन- लेखन : विज्ञापन कॉपी लेखन, विज्ञापन कॉपी के अंग, कॉपी लेखक के गुण

इकाई - 3 समाचार की परिभाषा और स्वरुप, समाचार के विभिन्न स्रोत, समाचार संकलन, समाचार लेखन

इकाई - 4 समाचार- पत्र का प्रबंधन

पाठ्यक्रम अधिगम परिणाम

इस पाठ्यक्रम के पूर्ण करने के पश्चात् विद्यार्थिओं में

1. विज्ञापन लेखन के प्रति उनकी अभिरुचि विकसित होगी।
2. मीडिया उद्योग में वे अच्छे कॉपी लेखक बन सकेंगे।
3. समाचार लेखन में अभिरुचि विकसित होगी।
4. रोजगार की दृष्टि से मीडिया के क्षेत्र में संभावनाएं बढ़ेगी।
5. छात्र मीडिया के लिए महत्वपूर्ण व्यक्तियों के साक्षात्कार लेने में सक्षम हो सकेंगे।

अंक विभाजन –

प्रश्नपत्र में कुल 50 अंक होंगे। अंकों का वितरण निम्नानुसार होगा –

सेमेस्टर लिखित परीक्षा	प्रश्नों की सँख्या	अंक
	इकाई –1 एवं इकाई–3 से 03 प्रश्न शेष इकाइयों में से प्रत्येक से 02 प्रश्न (इनमें से कुल 05 प्रश्न हल करना होगा)	4 X 5 = 20
आंतरिक मूल्यांकन	कुल 05 प्रश्न हल करना होगा।	1 x 5=05
प्रोजेक्ट कार्य : 25	कॉपी लेखन एवं समाचार लेखन का प्रायोगिक परीक्षण	25
कुल अंक		50

संदर्भ पुस्तकें :

1. जनसंपर्क : प्रचार एवं विज्ञापन – विजय कुलश्रेष्ठ
2. हिंदी पत्रकारिता – डॉ. कृष्णबिहारी)

हस्ताक्षर अध्ययन मंडल

सत्र 2023-2024

बी.ए. भाग- तीन

हिन्दी साहित्य - प्रश्न पत्र प्रथम

जनपदीय भाषा साहित्य (छत्तीसगढ़) -

पाठ्यक्रम कोड: BHN - 05

पूर्णांक 75

पाठ्यक्रम का उद्देश्य-

इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य है, विद्यार्थियों को

1. छत्तीसगढ़ी भाषा एवं संस्कृति के प्रति अभिमुख और जागरूक करना।
2. छत्तीसगढ़ी साहित्य की विभिन्न विधाओं का आरंभिक परिचय प्रदान करना।
3. छत्तीसगढ़ी संस्कृति के स्वभाव और उसके वैशिष्ट्य के विषय में सामान्य समझ तथा उसके प्रति सम्मान का भाव विकसित करना।
4. छत्तीसगढ़ी साहित्य में नवीन साहित्यिक विधाओं के विकास का सम्यक ज्ञान प्रदान करना।

पाठ्यक्रम विवरण :

इकाई 1.

(क) प्राचीन कवि संत धर्मदास के 3 पद

गुरू पईया लागों नाम लखा दीजो हो, नैन आगे ख्याल घनेरा, भजन करो भाई रे । (सन्दर्भ -धर्मदास की पदावली से उद्धृत)

इकाई 2.

(क) लखनलाल गुप्त का गद्य : सोनपान (गद्य पुस्तक: सोनपान से उद्धृत)

डॉ. सत्यभामा आडिल : सीख सीख के गोठ (गद्य पुस्तक 'गोठ' से उद्धृत)

(ख) द्रुतपाठ : सुन्दरलाल शर्मा

इकाई 3.

(क) डॉ. विनय पाठक की कविताएँ

तैंय उठथस सुरूज उथे, एक किसिम के नियाव ('अकादसी अऊ अनचिन्हार' पुस्तक से उद्धृत)

(ख) द्रुतपाठ : कपिलनाथ

इकाई 4.

(क) मुकुन्द कौशल : छत्तीसगढ़ी गजल

छ बित्ता के मनखे देखो, छोटे छोटे मछरीमन ल खा लेथे (पुस्तक 'छत्तीसगढ़ी गजल 'के पृष्ठ 17 से उद्धृत)

(ख) द्रुतपाठ रामचन्द्र देशमुख

इकाई 5.

(क) छत्तीसगढ़ी भाषा और साहित्य का इतिहास।

नोट- वस्तुनिष्ठ एवं लघुतरी प्रश्न प्रत्येक इकाई के खण्ड क एवं ख दोनों से पूछे जाएंगे। निबंधात्मक प्रश्न केवल खण्ड क से पूछे जाएंगे।

पाठ्यक्रम अधिगम परिणाम-

इस पाठ्यक्रम का अध्ययन करने के उपरांत विद्यार्थियों में -

1. छत्तीसगढ़ी भाषा एवं संस्कृति के प्रति अभिरूचि और सजगता विकसित होगी।
2. छत्तीसगढ़ी साहित्य की विभिन्न विधाओं का परिचय प्राप्त हो सकेगा।
3. छत्तीसगढ़ी संस्कृति के स्वभाव और उसके वैशिष्ट्य के विषय में सामान्य समझ विकसित हो सकेगी।
4. छत्तीसगढ़ी साहित्य में नवीन साहित्यिक विधाओं के विकास का सम्यक ज्ञान प्राप्त हो सकेगा।
5. छत्तीसगढ़ी संस्कृति के प्रति सम्मान का भाव उत्पन्न होगा

अंक विभाजन-

प्रत्येक प्रश्नपत्र में तीन खण्ड (क, ख, तथा ग) होंगे । विद्यार्थियों से पाठ्यक्रम में निर्दिष्ट विषय-सामग्री का अध्ययन अपेक्षित है ।

प्रत्येक प्रश्न पत्र 75 अंकों का होगा

क्र.	प्रश्न का प्रकार		अंक
खण्ड क	अति लघुत्तरी प्रश्न / वस्तुनिष्ठ प्रश्न (बहुविकल्पीय प्रश्न नहीं होंगे)		1 x 10 = 10
खण्ड ख	लघुत्तरी प्रश्न (प्रत्येक 150 शब्द अधिकतम)		5 x 5 = 25
खण्ड ग	दीर्घ उत्तरी प्रश्न (प्रत्येक 350 शब्द अधिकतम)	व्याख्यात्मक प्रश्न	8 X 2 = 16
		आलोचनात्मक प्रश्न	8X3- 24
		कुल	75 अंक

आधारग्रंथ -

जनपदीय भाषा और साहित्य (छत्तीसगढ़ी) प्र. सं. (डॉ. सत्यभामा आडिल) सं. (डॉ. तेजराम दिल्लीवार, डॉ. श्रीमती सविता मिश्रा)

हस्ताक्षर अध्ययन मण्डल -

सत्र 2023-2024

बी.ए. भाग- तीन

हिन्दी साहित्य - प्रश्न पत्र द्वितीय

हिन्दी भाषा-साहित्य का इतिहास तथा काव्यांग विवेचन

पाठ्यक्रम कोड : BHN - 06

पूर्णांक 75

पाठ्यक्रम का उद्देश्य -

इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य है, विद्यार्थियों को

1. हिन्दी भाषा की उत्पत्ति तथा उसके ऐतिहासिक विकास की समुचित जानकारी प्रदान करना।
2. हिन्दी भाषा के विविध रूपों के व्यवहारिक तथा अनुप्रयोगात्मक पक्ष का ज्ञान प्रदान करना।
3. हिन्दी साहित्य के ऐतिहासिक विकासक्रम से अवगत कराना।
4. हिन्दी समाज के सामाजिक, सांस्कृतिक विकास के समानांतर हिन्दी भाषा और साहित्य के विकास-क्रम की समझ विकसित करना।

पाठ्यक्रम विवरण -

इकाई 1.

हिन्दी भाषा का स्वरूप विकास हिन्दी की उत्पत्ति, हिन्दी की मूल आकर भाषाएं तथा विभिन्न विभाषाओं का विकास

हिन्दी भाषा के विभिन्न रूप 1. बोलचाल की भाषा 2. रचनात्मक भाषा 3. राष्ट्रभाषा, 4. राजभाषा, 5. सम्पर्क भाषा 6. संचार भाषा।

हिन्दी का शब्द भण्डार तत्सम, तद्भव, देशज, आगत शब्दावली ।

इकाई 2.

हिन्दी साहित्य का इतिहास : प्राचीन काल की सामाजिक, सांस्कृतिक पृष्ठभूमि।

प्रमुख युगप्रवृत्तियाँ, विशिष्ट रचनाकार और उनकी प्रतिनिधि कृतियों तथा साहित्यिक विशेषताएँ ।

इकाई 3.

मध्यकाल की सामाजिक, सांस्कृतिक पृष्ठभूमि, प्रमुख युग प्रवृत्तियाँ, विशिष्ट रचनाकार और उनकी प्रतिनिधि कृतियां तथा साहित्यिक विशेषताएँ।

इकाई 4.

आधुनिक काल की सामाजिक, सांस्कृतिक पृष्ठभूमि प्रमुख युगप्रवृत्तियाँ विशिष्ट रचनाकार और उनकी प्रतिनिधि कृतियाँ तथा साहित्यिक विशेषताएं।

इकाई 5.

काव्यांग : काव्य का स्वरूप एवं प्रयोजन, रस के विभिन्न भेद विभिन्न अंग तथा उदाहरण।

प्रमुख 5 छंद : दोहा, सोरठा, चौपाई, कुण्डलियाँ, सवैया।

शब्दालंकार : अनुप्रास, यमक, श्लेष, वक्रोक्ति, पुनरुक्ति प्रकाश।

अर्थालंकार : उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, अतिशयोक्ति, भ्रांतिमान।

पाठ्यक्रम अधिगम परिणाम –

इस पाठ्यक्रम को पूर्ण करने के पश्चात विद्यार्थी

1. हिन्दी भाषा की उत्पत्ति तथा उसके ऐतिहासिक विकास का समुचित ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।
2. हिन्दी भाषा के विविध रूपों के व्यवहारिक तथा अनुप्रयोगात्मक पक्ष का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।
3. हिन्दी साहित्य के ऐतिहासिक विकासक्रम से अवगत हो सकेंगें।
4. हिन्दी समाज के सामाजिक सांस्कृतिक विकास के समानांतर हिन्दी भाषा और साहित्य के विकास क्रम की समझ प्राप्त कर सकेंगे।
5. काव्य सृजन के सैद्धांतिक तथा शास्त्रीय स्वरूप से परिचित हो सकेंगे।

अंक विभाजन–

प्रत्येक प्रश्नपत्र में तीन खण्ड (क, ख, तथा ग) होंगे । विद्यार्थियों से पाठ्यक्रम में निर्दिष्ट विषय–सामग्री का अध्ययन अपेक्षित है ।

प्रत्येक प्रश्न पत्र 75 अंकों का होगा

क्र.	प्रश्न का प्रकार		अंक
खण्ड क	अति लघुत्तरी प्रश्न / वस्तुनिष्ठ प्रश्न (बहुविकल्पीय प्रश्न नहीं होंगे)		1 x 10 = 10
खण्ड ख	लघुत्तरी प्रश्न (प्रत्येक 150 शब्द अधिकतम)		5 x 5 = 25
खण्ड ग	दीर्घ उत्तरी प्रश्न (प्रत्येक 350 शब्द अधिकतम)	व्याख्यात्मक प्रश्न	8 X 2 = 16
		आलोचनात्मक प्रश्न	8X5 =40
		कुल	75 अंक

आधार ग्रंथ –

1. हिन्दी साहित्य का इतिहास
सं. डॉ. सुशील त्रिवेदी एवं बाबूलाल शुक्ल (प्रकाशक) म.प्र.उ.शि.] अनुदान आयोग, भोपाल

संदर्भ ग्रंथ –

1. राजभाषा हिन्दी : मलिक मोहम्मद (प्रभात प्रकाशन दिल्ली)
हिन्दी भाषा : डॉ. भोलानाथ तिवारी

हस्ताक्षर अध्ययन मण्डल –

सत्र 2023-2024

बी.ए./बी.एससी./बी.कॉम भाग- तीन

हिन्दी भाषा

प्रश्न पत्र - प्रथम

सम्प्रेषण कौशल, हिन्दी भाषा और सामान्य ज्ञान

पाठ्यक्रम कोड : FCH 03-A

पूर्णांक 75

पाठ्यक्रम का उद्देश्य -

इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य है, विद्यार्थियों को-

1. हिन्दी के साहित्य की मूल संवेदना से सामान्य रूप से परिचित कराना।
2. भारत की सामाजिक-आर्थिक समस्याओं तथा समग्र राष्ट्रीय विकास की रणनीति के विषय में सामान्य जानकारी प्रदान करना।
3. हिन्दी में अभिव्यक्ति की पद्धतियों से अवगत कराना तथा उनके सम्प्रेषण कौशल में वृद्धि करना।
4. कामकाजी भाषा का सम्यक ज्ञान प्रदान करना।

पाठयक्रम का विवरण

इकाई- 1

(क) भारत माता : सुमित्रानंदन पंत

(ख) कथन की शैलियाँ

1. विवरणात्मक शैली
2. मूल्यांकनपरक शैली
3. व्याख्यात्मक शैली
4. विचारात्मक शैली

इकाई-2

(क) सूखी डाली : उपेन्द्रनाथ अश्क

(ख) विभिन्न संरचनाएँ

1. विनम्रता सूचक संरचनाएँ
2. विधि सूचक संरचनाएँ
3. निषेध परक संरचनाएँ
4. कालबोधक संरचनाएँ
5. स्थानबोधक संरचनाएँ
6. दिशाबोधक संरचनाएँ
7. कार्य-कारण सम्बन्ध संरचनाएँ
8. अनुक्रम

इकाई 3

(क). वसीयत : मालती जोशी

(ख). कार्यालयीन पत्र और आलेख

1. परिपत्र
2. आदेश
3. अधिसूचना
4. ज्ञापन
5. अनुस्मारक
6. पृष्ठांकन

इकाई 4

(क) योग की शक्ति : हरिवंशराय बच्चन

(ख) अनुवाद परिभाषा, स्वरूप एवं महत्व।

1. सोत भाषा और लक्ष्य भाषा
2. अच्छे अनुवाद की विशेषताएँ
3. अनुवाद प्रक्रिया, अनुवादक

इकाई 5

(क) संस्कृति और राष्ट्रीय एकीकरण : योगेश अटल।

(ख) घटनाओं, समारोहों आदि का प्रतिवेदन, विभिन्न प्रकार के निमंत्रण पत्र।

पाठ्यक्रम का अधिगम परिणाम –

इस पाठ्यक्रम का अध्ययन करने के उपरांत विद्यार्थी का

1. हिन्दी के साहित्य से सामान्य परिचय हो सकेगा।
2. हिन्दी में अभिव्यक्ति की पद्धतियों से परिचय होगा तथा उसके संप्रेषण–कौशल में वृद्धि हो सकेगी।
3. कामकाजी भाषा लिखने का कौशल विकसित हो सकेगा।
4. भारतीय संस्कृति के समन्वयात्मक स्वाभाव के प्रति विश्वास जागृत हो सकेगा।

अंक विभाजन-

प्रत्येक प्रश्नपत्र में तीन खण्ड (क, ख, तथा ग) होंगे । विद्यार्थियों से पाठ्यक्रम में निर्दिष्ट विषय-सामग्री का अध्ययन अपेक्षित है ।

प्रत्येक प्रश्न पत्र 75 अंकों का होगा

क्र.	प्रश्न का प्रकार		अंक
खण्ड क	अति लघुत्तरी प्रश्न / वस्तुनिष्ठ प्रश्न (बहुविकल्पीय प्रश्न नहीं होंगे)		1 x 10 = 10
खण्ड ख	लघुत्तरी प्रश्न (प्रत्येक 150 शब्द अधिकतम)		5 x 5 = 25
खण्ड ग	दीर्घ उत्तरी प्रश्न (प्रत्येक 350 शब्द अधिकतम)	व्याख्यात्मक प्रश्न	8 X 2 = 16
		आलोचनात्मक प्रश्न	8X5 =40
		कुल	75 अंक

आधारग्रंथ -

हिन्दी भाषा एवं सम सामयिकी - प्रधान सम्पादक : डॉ. धनंजय वर्मा (म.प्र. हिन्दी ग्रंथ अकादमी, भोपाल)

हस्ताक्षर अध्ययन मण्डल -